Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 7 | ISSUE : 6 | JUNE 2021

उदयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन

श्रीमती ममता श्रीमाली [1]

[1] शोधार्थी – शिक्षा संकाय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्विविद्यालय, उदयपुर.

ABSTRACT:

मानव ने पर्यावरण के उपयोग और उसमें परिवर्तन करने के कई तरीके सीख लिए। उसने फसल उगाना, पशु पालना एवं स्थायी जीवन जीना सीख लिया। पहिए का आविष्कार हुआ, आवश्यकता से अधिक अन्न उपजाया गया, वस्तु–विनिमय पद्धति का विकास हुआ, व्यापार आरंभ हुआ एवं वाणिज्य का विकास हुआ। औद्योगिक क्रांति से बड़े पैमाने पर उत्पादन प्रारंभ हो गया। परिवहन तेज गति से प्रारंभ हुआ। सूचना क्रांति से पूरे विश्व में संचार, सहज आर द्रुत हो गया। इस तरह पर्यावरण जागरूकता द्वारा बालकों को यह ज्ञात कराया जा सके कि पर्यावरण को संतुलित एवं संरक्षित रखना हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है आज के विद्यार्थी कल का भविष्य है। यदि वे पर्यावरण के महत्व को समझ कर सुरक्षित तरीके से इनका संचालन एवं संवर्द्धन करें तो समाज में स्वतः ही परिवर्तन आएगा।

KEYWORDS:

प्रस्तावना–

मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा ही मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाती है। जन्म के समय बालक का आचरण पशु के समान रहता है। वह अपनी मूल प्रवृति से प्रेरित होकर आचरण करता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक का संर्वागिंण विकास होता है। इसलिए शिक्षा केवल विद्यालय तक ही सिमित नहीं रहती है बल्कि संपूर्ण जीवन को स्पष्ट करती है।

शिक्षा के आधुनिक आयाम जीवन जगत से जुड़े अनेक क्षेत्रों को छू रहे हैं जिसका मानव जीवन से घनिष्ठ संबंध हैं। शिक्षा का जैसे–जैसे विकल्प हुआ है वैसे–वैसे मनुष्य समाज की नवीन आवश्यकताओं की ओर चुनौतियों के प्रति उसका संबंध विकसित होता गया है। इसी आवश्यकता कि एक अभिव्यक्ति पर्यावरण के प्रति जागरूकता का एक गुण है।

अतः पर्यावरण को संतुलित रखना आज की महत्ती आवश्यकता है। पर्यावरण शब्द दो शब्दों से परि+आवरण से बना है परि का अर्थ चारों ओर तथा आवरण का अर्थ घेरा अर्थात हमारे चारों ओर का घेरा ही पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण में उन सभी कारणों को सम्मिलित किया जाता है। जिसका प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव मानव जाति की प्राकृतिक परिवेश पर होता है मनुष्य एवं पर्यावरण की बीच घनिष्ठ संबंध होता है। पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए हमें प्रत्येक कार्य पर्यावरण संगत रखना चाहिए। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में मानव आधुनिकरण और विकास भी अंधी दौड़ में शामिल होकर पर्यावरणीय मूल्या को अनदेखा कर रहा है जो पूरे विश्व के लिए खतरे की घंटी हैं।

पर्यावरण के संदर्भ में विद्यार्थियों को जानकारी देना एवं पर्यावरण की समस्या से उन्हें अवगत कराना है जिससे वे भविष्य में आ सकने वाली समस्याओं को रोक सके एवं उनका हल खोज सके। इस तरह पर्यावरण जागरूकता द्वारा बालकों को यह ज्ञात कराया जा सके कि पर्यावरण को संतुलित एवं संरक्षित रखना हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है आज के विद्यार्थी कल का भविष्य है। यदि वे पर्यावरण के महत्व को समझ कर सुरक्षित तरीके से इनका संचालन एवं संवर्द्धन करें तो समाज में स्वतः ही परिवर्तन आएगा।

समस्या का कथन–

''उदयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य–

1 उदयपुर जिले की सरकारी माध्यमिक स्तर की विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।

2 उदयपुर जिले के निजी माध्यमिक स्तर की विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना परिकल्पएँ–

परिकल्पना H1– उदयपुर जिले के सरकारी माध्यमिक स्तर की विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना H2– उदयपुर जिले की निजी माध्यमिक स्तर की विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं हैं।

प्रतिदर्श–

प्रस्तुत शोध में उदयपुर जिले की पांच सरकारी एवं पांच निजी माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया।

क्षेत्र एवं परिसीमाएं–

प्रत्येक अनुसंधानकर्ता की कुछ परिसीमाएं होती हैं जिन्हें दृष्टिगत रखते हुए वह कार्य करता हैं अर्थात समय व साधन को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने शोध के उद्देश्यों की पूर्ती के लिए उदयपुर जिले के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया। इन विद्यालयों में 250 विद्यार्थी जिनमें से 125–125 छात्र–छात्राएं हैं।

अनुसंधान विधि–

प्रस्तुत शोध कार्य मे शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि उपयोग करने का निश्चय किया है। शैक्षिक समस्याओं के प्रति सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक व्यापक रूप से प्रयुक्त किए जाने वाली विधियो में से एक हैं।

उपकरण–

प्रस्तुत शोधकार्य म शोधकर्ता ने पर्यावरण जागरूकता के मापन हेतु डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित व प्रमाणित उपकरण का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण–

परिकल्पना से प्राप्त **प्रदत्तो** का विश्लेषण किया जाएगा। इस हेतु आवश्यक सांख्यिकी जैसे मध्यमान, Z परीक्षण, प्रमाणिक विचलन एवं सह–संबंध, गुणांक आदि का प्रयोग शोधकर्ता द्वारा किया जाएगा।

परिकल्पना H1 – उदयपुर जिले के सरकारी माध्यमिक स्तर की विद्यालयों की छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता के सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक –1

विद्यालयों	विद्यार्थीयों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	स्वतत्रंता पर अंश	Z का मान
सरकारी छात्र	125	44.37	4.54	124	1.59
सरकारी छात्राओं	125	43.84	5.10	124	1.59

(df=124 P –05)

उपयुक्त तालिका का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सरकारी छात्र का पर्यावरण जागरूकता का मध्यमान 44.37 तथा प्रमाणिक विचलन 4.54 प्राप्त हुआ है। सरकारी छात्राओं का पर्यावरण जागरूकता का मध्यमान 44.84 तथा प्रमाणिक विचलन 5.10 प्राप्त हुआ है। टी का मान 1.59 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता स्तर पर सार्थक हैं (df=124 P –05) की पुष्टि करता है कि सरकारी छात्र–छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता का सार्थक अंतर नहीं पाया गया है अतः उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना H2 –उदयपुर जिले की निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता के सार्थक अंतर नहीं है ।

सारणी क्रमांक –2

विद्यालय	विद्यार्थीयों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	स्वतत्रंता पर अंश	Z का मान
सरकारी छात्र	125	44.43	4.94	124	1.59
सरकारी छात्राओं	125	43.84	5.14	124	1.59

(df=124 P0 .05)

उपयुक्त सारणी क्रमाकं–2 को देखने पर स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालयों में छात्र पर्यावरण जागरुकता का मध्यमान 44.43 तथा प्रमाणिक विचलन 4.94 प्राप्त हुआ है। निजी विद्यालय की छात्राओं का पर्यावरण जागरुकता का मध्यमान 43.84 प्रमाणिक विचलन 5.14 प्राप्त हुआ है। तथा टी मान 1.59 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता स्तर पर सार्थक है। (df=124 P0 .05) की पुष्टि करता है कि निजी विद्यालय की छात्र छात्राओं में पर्यावरण जागरुकता का सार्थक अंतर नहीं पाया गया है अतः उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं।

सुझावः–

1 विद्यार्थियों को पर्यावरण के महत्व और उनके प्रभाव के संबंध में जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।

2. पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं के कारण तथा उन्हें कम करने के उपायों की जानकारी प्रदान करना चाहिए।

3. सरकार द्वारा पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कारकों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए।

4. कारखानों से होने वाले प्रदूषण के लिए उचित व्यवस्था करनी चाहिए।

5. विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना चाहिए।

REFERENCES

1. शर्मा एच.एस. एवं प्रो सिंह एच.पी. ''पर्यावरण शिक्षा'' राधा प्रकाशन, मंदिर, आगारा।

2. शर्मा आर.ए. ''शिक्षा अनुसंधान'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

3. गोयल एम.के.''पर्यावरण शिक्षा'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगारा।

4. कपिल एच.के. ''अनुसंधान विधियां'' मार्गन बुक हाउस, भवन कचहरी घाट, आगारा।

5. माथुर ए.एन., राठोड एन.एस. एवं विजय वि.के. ''पर्यावरण बोध'' हिमाशु पब्लिकेशन, उदयपुर।

6. का. गोयल एम.के. ''पर्यावरण शिक्षा'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

7. लोढा आर. एन. एवं महेश्वरी दीपक ''मानव और पर्यावरण'' हिमाशु पब्लिकेशन, उदयपुर।